हर बच्चा है खास

अबूज़र

प्रोजेक्ट असिस्टंट, जशने तालीम, एकलव्य, मध्य प्रदेश

मुझे एकलव्य संस्था के साथ जुड़ कर प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करते हुए लगभग 2 वर्ष हो गए हैं। इस दौरान मेरा होशंगाबाद जिले के कई प्राथमिक स्कूलों में अकादमिक सहयोग हेतु निरंतर आना-जाना होता रहता है और प्रतिदिन मुझे बच्चों की अनूठी विशेषताओं से रुबरु होने का मौका मिलता रहता है। कई बच्चों से मैं व्यक्तिगत तौर पर काफी प्रभावित भी होता हूँ। इन्हीं बच्चों में से एक सारिका नामक बच्ची मेरे लिए काफी खास है। सारिका से केवल मैं ही नहीं बल्कि प्राथमिक शाला बोरखेड़ा के शिक्षक भी काफी प्रभावित हैं। सारिका अभी सात साल की है। जबसे उसने बोलना शुरु किया तभी से वह अपने माता-पिता से न के बराबर बातचीत करती थी। साथ ही प्रायः सारिका के पालक मजदूरी करने हेतु घर से बाहर चले जाते थे | जिससे वे सारिका को अतिरिक्त समय नहीं दे पाते थे | जो भी समय मिलता माता-पिता उससे बात करने की कोशिशें भी करते रहते थे | फिर भी उन्हें असफलता ही हाथ लगती थी। इस वजह से माता पिता को उसकी ख़ासी चिंता रहती थी। शायद चिंता की एक वजह यह भी रही कि माता पिता पढ़े लिखे न हो पाने एवं बच्चे की विशेष परिस्थिति से सम्बन्धी स्वयं की कोई ख़ास समझ न हो पाने के कारण अपनी बच्ची को वर्तमान स्थिति से उबरने में कोई ख़ास पहल नहीं कर पाए |

शैक्षिक सत्र 2019 - 20 की शुरुआत में सारिका की माँ ने उसे उसकी मौसी के घर छोड़ दिया। उन्होंने उसे मौसी के यहाँ इसलिए रखा ताकि वह अपने मौसेरे भाइयों शिवम और संगम के साथ खेल सके और उन्हीं के साथ स्कूल भी जा सके। माँ को यह आशा थी की शायद इससे बच्ची का कुछ विकास होगा परंतु लगभग 15 दिनों तक मौसी के घर रहने एवं स्कूल जाने के पश्चात भी बच्ची के बर्ताव में कोई परिवर्तन नहीं आया। वह स्कूल के एक कमरे के कोने में बैठकर सिसकियाँ लेती रहती थी। उसको इस प्रकार डरा-सहमा देखकर शिक्षकों को भी चिंता होने लगी। शिक्षकों ने बच्ची को स्कूल के माहौल में ढालने की दिशा में भी सोचना शुरु किया। शुरूआती प्रयास में असफलताएँ ही हाथ लगी। शिक्षक जब भी उससे बातचीत करने का प्रयास करते तो वह इतनी सहम सी जाती कि उसकी आँखों से आँसुओं की धारा बहने लगती।

स्कूल के शिक्षकों को समझ नहीं आ रहा था कि वे सारिका के लिए स्कूल में दोस्ताना माहौल कैसे बनाएँ। इसी दौरान एक दिन बच्ची की मौसी स्कूल आई। उन्होंने शिक्षकों से सारिका को घर ले जाने का आग्रह किया। वे सारिका को उसकी माँ के पास उसके गाँव चांदकिया पहुँचाना चाहती थीं। स्कूल के शिक्षकों ने बच्ची की मौसी से उसके बारे में और बातें जानने की कोशिश की। सारिका की मौसी से बात करके शिक्षकों को मालूम हुआ कि उन्हें प्रतिदिन मजदूरी हेतु जाना पड़ता था और इसके साथ ही बच्ची की नित्य क्रियाओं का भी पूर्ण रुप से ध्यान देना पड़ता है। अपनी दिहाड़ी मजदूरी के काम की वजह से वे बच्ची का ख्याल रख पाने में असमर्थ महसूस कर रही थीं और इसी वजह से उन्होंने उसे वापस उसकी माँ के पास भेजने का फैसला लिया था।

सारिका को स्कूल में आए काफी समय हो गया था और उसका व्यवहार देखकर शिक्षकों ने उसके प्रति कुछ धारणाएँ भी बना ली थीं। उन्होंने यह धारणा बनाई थी कि या तो उसे बहुत डराया जाता है या वह मानसिक और शारीरिक रुप से अस्वस्थ है। मौसी से बात करके शिक्षकों को समझ आया कि न केवल स्कूल में बल्कि घर में भी बच्ची अपने हमउम्र बच्चों के साथ ज़्यादा घुलती-मिलती नहीं है। उसके मन में एक विशेष प्रकार का डर समाया रहता है।

मौसी से मिलने के बाद स्कूल के दोनों शिक्षकों ने सारिका के साथ काम करने को एक चुनौती की तरह लिया और उन्होंने निश्चय किया कि वे उसके साथ और भी अधिक समय बिताएँगे तथा और अधिक लगन के साथ काम करेंगे। उन्होंने सारिका की मौसी से यह कहा कि अगर वे आज सारिका को लेकर चली जाएँगी तो एक शिक्षक के तौर पर यह उनकी हार होगी। उन्हें हमेशा इस बात का अफसोस रहेगा की वे सारिका को सीखने का उचित माहौल नहीं उपलब्ध करा सके। उन्होंने उनसे पंद्रह दिन का अतिरिक्त समय मांगा ताकि वे सारिका के साथ और भी बेहतर ढंग से काम कर सकें। सारिका की मौसी ने शिक्षकों के इस अनुरोध को स्वीकार किया और उसे स्कूल में छोडकर वापस चली गईं।

इस घटना के बाद शिक्षकों ने बच्ची को अतिरिक्त समय देना शुरु किया लेकिन फिर भी बच्ची स्कूल में सहज नहीं महसूस कर पा रही थी। न बच्ची दौड़ रही थी, न खेल में हिस्सा ले रही थी, न कुछ बोल रही थी, न ताली बजा रही थी, सारिका के साथ सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि किस प्रकार से उसके मन के डर एवं झिझक को दूर किया जाए | ऐसा अनुमान था कि इन दो हिस्सों पर कुछ काम हो पाया तो आगे की मुश्किलें आसान हो जायेंगी | चिंता के इस दौर से गुज़रते हुए शिक्षकों ने कुछ और तरीके आजमाने शुरु किए, जैसे उन्होंने दूसरी कक्षा में पढ़ने वाली सुहाना और प्रिया को सारिका से

बात करने और अपने साथ खेलने हेतु बाहर ले जाने की ज़िम्मेदारी सौंपी। कहीं न कहीं अब उनसे प्रयास एक सही दिशा लेते हुए प्रतीत हो रहे थे।

इसी बीच मैंने भी स्कूल में जाना शुरू किया। शिक्षकों ने सारिका के मामले को मुझसे साझा किया। हमने बच्चों के साथ कुछ सामूहिक गतिविधियाँ शुरू की। जैसे- समूह में बच्चों को निर्देश दिए गए खड़े हो जाओ, बैठ जाओं, कूदो, रुक जाओ आदि। इन गतिविधियों को करते हुए हम सारिका का खास अवलोकन करने की कोशिश करते थे। हमने पाया कि सामूहिक गतिविधियों के दौरान सारिका कुछ निर्देशों का पालन कर पा रही थी परंतु उतनी फुर्ती से नहीं जितनी फुर्ती से अन्य बच्चे कर पा रहे थे। जहाँ अन्य बच्चे खड़े होकर अगले निर्देश की प्रतीक्षा करते थे, तो वह धीरे-धीरे खड़ी हो पाती थी।

इसके बाद मैंने और शिक्षकों ने दूसरी गतिविधि शुरू की। मुझे पूर्वानुमान था कि पहली और दूसरी के लगभग सभी बच्चों को रंगों की पहचान होगी। इसी को आधार बनाते हुए बच्चों को लाइन में खड़ा किया गया। उसी लाइन में सारिका भी खड़ी थी। सभी बच्चों को बारी बारी से लाल,सफ़ेद,हरा,पीला आदि रंगों को छू कर वापस आने को बोला गया। सभी ने सही प्रकार से निर्देशों का पालन करते हुए गतिविधि पूरी की। सारिका की बारी आने पर उसे सबसे पहले सफ़ेद एवं फिर लाल रंग को चुनने का निर्देश दिया गया। सारिका ने भी निर्देशों का पालन सही-सही किया। इतना देखना था कि शिक्षकों एवं मेरे मन में ख़ुशी की लहर दौड़ पड़ी। हमारे मन में उम्मीदों की किरण जागी। हमें यह समझ आया कि प्रत्यक्ष बातचीत या निर्देशन की बजाय समूह कार्य इस बच्ची के सीखने को गति प्रदान करने में अधिक उपयोगी सिद्ध होगा ।

सारिका समूह में बेहतर सीख सकती है यह पता चल जाने के बाद हमने बच्चों के साथ किए जाने वाले अधिकतर क्रियाकलापों में समूह कार्यों को प्राथमिकता देनी शुरू की, जैसे शब्द चित्र कार्डों की पहचान सामूहिक रूप से गिनती कार्डों को जमाने का कार्य, गिनमाला को गिनने के अभ्यास। इसके अलावा हमने उसे कुछ जिम्मेदारियाँ भी सौंपनी शुरू कीं जैसे कि जब सभी बच्चे बाहर ग्राउंड में खेल रहे हों तो सारिका को सभी बच्चों को वापस कक्षा में बुलाने की ज़िम्मेदारी सौपी जाती थी। उसे प्रोत्साहित करने के लिए और भी तरीके आजमाए गए जैसे यदि वह किसी दिन नए कपड़े पहनकर आती तो शिक्षक उसकी तारीफ करते। लंच के बाद जब बच्चे खेल में व्यस्त रहते उस समय कभी कभी मैडम सारिका को अपने पास बुलाती और बहुत ही सहज भाव से बातचीत करने का प्रयास करती रहती | सामान्यतः आज सुबह क्या नाश्ता खा कर आई हो | गुरुवार को बाज़ार गई थी वहाँ से क्या क्या सामान खरीद कर लाई थी | मौसी ने तुम्हारे लिए क्या सामान ख़रीदा आदि |

सारिका बच्चों के बीच खेलने, गतिविधि करने में जब भी संलग्न नज़र आती तो शिक्षक उसके विषय में निरंतर आपसी चर्चाएँ करते रहते थे | कि देखिये सारिका की लगनशीलता बढ़ रही है अब बच्चों के साथ घुलने मिलने में उतना संकोच नहीं कर रही | देखिये अब आपस में बातचीत भी शुरू कर दी | शिक्षकों के बीच होने वाली ये चर्चाएँ भी सारिका के साथ कार्य को आगे बढाने में एक कार्य योजना का रूप लेती हुई प्रतीत हो रही थी |

उपर्युक्त तमाम प्रयासों को करते हुए यह डर बार बार बना रहता था कि हमारे किसी वक्तव्य से उसके मनोचित को कोई आघात न पहुचे | इस दौरान शिक्षक बहुत ही सहजवृत्ति से पेश आने का प्रयास करते रहे परन्तु कई बार सारिका के झुझलाहट भरी शारीरिक प्रतिक्रिया को भी सहन करना पड़ा | मेरी समझ से शिक्षकों की यह सहनशीलता एवं बच्चों के साथ भावनात्मक सम्बन्ध ही सारिका के सम्पूर्ण व्यक्तित्व की कायापलट में अहम भूमिका निभाई है |

सारिका के साथ डेढ़ महीने तक इस प्रकार किए गए प्रयासों के फलस्वरूप आज वह काफी मुखर हो गई है। अब वह अपनी हर बात को निडरता के साथ बोलने में सक्षम है। यही नहीं उसकी सीखने की गति में भी वृद्धि हुई है। अब वह अँग्रेजी के सभी वर्णों को पहचानने लगी है। वह हिंदी के भी अधिकतर वर्णों को पहचान पाने में सक्षम है।

सारिका अब स्कूल में काफी खुश रहती है, उसकी सीखने की गति में भी काफी तेज़ी आई है। जो बच्ची प्रतिदिन घर जाने हेतु सिसकियाँ लेती थी आज जब उससे पूछा जाता है कि क्या वह अपने घर के पास वाले स्कूल में पढ़ने जाना चाहेगी तो जवाब मिलता है नहीं जाऊँगी यहीं पढ़ूंगी। इस निडरता के पीछे स्कूल के शिक्षकों की लगनशीलता,तन्मयता, और अपने कार्यों के प्रति उनका समर्पण जिम्मेदार है। जिस बच्ची में सीखने की ललक को जगा पाना मील का पत्थर लग रहा था उसमें इतना आशावादी परिवर्तन ला सकने से दोनों शिक्षक बहुत प्रसन्न हैं। उनका मानना है कि सारिका के साथ काम करके उनके व्यवसायिक कौशलों में निखार आया है, उनके मनोबल और आत्मविश्वास में बढ़ोतरी हुई है और अब वे अपना शिक्षकीय कार्य दोगुने उत्साह से कर पा रहे हैं।

सारिका के व्यवहार में आए इस सकारात्मक बदलाव से उसके शिक्षक, माता-पिता और रिश्तेदार सभी काफी खुश हैं। सारिका के उदाहरण से हमें पता चलता है कि यदि शिक्षक चाह ले तो कुछ भी असंभव नहीं। यदि वे समस्याओं को समस्या मानकर हाथ पर हाथ धरकर बैठने की बजाय उसे हल करने के लिए प्रयास करें तो समस्याएँ हल हो ही जाती

हैं। शिक्षकीय कार्यों के दौरान होने वाले इस प्रकार के अनुभवों से शिक्षकों के सीखने और सोचने-समझने के दायरे का विस्तार होता है।

सारिका का उदाहरण यह भी दर्शाता है यदि बच्चों के साथ प्यार और धैर्य के साथ काम किया जाए तो हरेक बच्चा सीखने में सक्षम होता है।